प्रकृति विज्ञान

जीवन एक चक्रव्यूह, जीवन का चक्रव्यूह

अशोक 'मानव'

जीवन प्रकृति की एक चक्रव्यूह रचना है। जो सूर्य और जल के मिलने से होती है। चक्रव्यूह की रचना दो प्रकार की होती है। एक सकारात्मक दूसरी नकारात्मक, सकारात्मक चक्रव्यूह की रचना में जीव का विकास प्रकृति विस्तार के लिए होता है। इस रचना में जीव का निर्माण कर उसकी सुरक्षा, आवश्यकता पूर्ति के लिए 7 द्वार का चक्रीय घर बनता है जिसे शरीर कहते है। यह रचना एक खेल से शुरू होता है, जो कबड्डी जैसा होता है। सूर्य प्रकाश जल का भेदन कर आगे बढ़ने का प्रयास करता है। इस प्रक्रिया में जल हवा बनकर आगे बढ़कर आसमान की तरफ जाता है। जो प्रकाश को रोककर जीवन निर्माण के लिए उचित तापमान बनाये रखने के लिए कई परत बनाता है जिसमें जीवन सर्वायु (जीवित) रह सके। इसके बाद यही हवा प्रकाश को घेर कर भारी करता है जिससे प्रकाश वापस न जा पाये। हवा जल तत्व का परिवर्तित रूप होता है जो मातृत्वरूप होता है। यह प्रकाश को आत्मिक (आत्मा) रचना में रोकता है जो प्रकाश का बीज रूप बन जाता है। यही चक्रव्यूह की रचना जीवन धारण करती है। आत्मा जल तत्व से बनती है जो प्रकाश को रोकती है, हवा तत्व एक व्यूह बनाकर इन्हे घेरता है। इसी प्रकार प्रकृति में जीव का निर्माण होता है। जीव अपना शरीर छोड़कर जाते है तो उससे पदार्थ का निर्माण होता है। इस प्रकार प्रकृति का निरन्तर विस्तार होता रहता है। 'हवा' तत्व में ब्रह्माण के सभी पिण्ड पदार्थ का गुण मिला होता है जो आवश्यकतानुसार हर तत्व की पूर्ति कराता रहता है। इस प्रकार सकारात्मक चक्रव्यूह की रचना प्रथम तीन द्वार से तैयार होती है। जिसमें प्रथम - 'जल तत्व' दूसरा 'जीव प्रकाश' जो जल तत्व के आत्मिक घेरे में रूकता है। तीसरा 'हवा तत्व' जो इन्हें एक घेर में रोकता है। यही तीन द्वार उचित जलवायु पाने पर शरीर की रचना करते है। शरीर की आवश्यकता पूर्ति, सुरक्षा के लिए चार और द्वार की रचना करते है। इस प्रकार चक्रव्यूह रचना में सात द्वार बनते है। पहला 'जल' दूसरा 'हवा' तीसरा 'जीव प्रकाश'। ये तीनों मिलकर चौथे द्वार 'आत्मा' का निर्माण करते है। आगे आत्मा जीव विकास के लिए पॉचवा द्वार 'मस्तिष्क' छठा द्वार 'पाचनतंत्र' और सातवा द्वार 'गुर्दो' का निर्माण करती है। यही सात द्वार शरीर की सुरक्षा और आवश्यकता की पूर्ति करते है। शरीर विकास के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। जिससे शरीर का विकास होता है। जो भोजन शरीर में आता है उसे प्रकाश तत्व जलाकर हर तत्व को अलग करता है और हवा तत्व उसे उचित स्थान पर पहुँचाता है। जल तत्व उसे धारण करता है। इस प्रकार से जिस अंग की जरूरत होती है उसका निर्माण होता है। मस्तिष्क में आज्ञाचक्र होता है जो इच्छाशक्ति को जन्म देता है जो हवा तत्व है। यही शरीर की आवश्यकता की पूर्ति कराता है। यही पर जीव प्रकाश में 'मन' का निर्माण होता है। जो अपने प्रकाश से विषय की जानकारी देता है जो आज्ञाचक्र पर अंकित होती है। जिसे शरीर एहसास कर इच्छा को पैदा करता है। इच्छा शरीर के माध्यम से उसकी पूर्ति करता है। इच्छानुसार मन को शरीर से बाहर जाना पड़ता है। जिसे शरीर से जोड़ने क लिए आन्तरिक पॉच द्वार की रचना होती है। जिसमें 'ऑख', 'कान', 'नाक', 'मुँह', 'मूत्र त्याग' है। इन पॉचो द्वार की रचना एक दूसरे से जुड़ी होती है। यह रचना घुमावदार होती है। इसमें ताकतवर हवा बनती है जो मन को शरीर से जोड़ती है। यह क्रिया पॉचों द्वार के घुमावदार होने के कारण होती है। इसमें हवा की चुम्बकीय प्रणाली से हवा ताकतवर बनती है जो मन को शरीर से बाहर अन्दर करने की क्रिया करती है। मन इच्छानुसार शरीर से बाहर जाता है और शरीर की आवश्यकतानुसार शरीर के अन्दर